A Pratibha Spandan's Journal

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

वेदों में वर्णित शिक्षा के माध्यम से नैतिक उत्थान

Dr. Mritunjay Sharma[1], Dr. Virender Kaushal[2], Sunita Devi[3]

1 Assistant Professor (Instrumental), Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla, India.
2 Coordinator (Online Courses), Consortium for Educational Communication (CEC), IUAC Campus, Aruna Asaf Ali Marg, New Delhi
3 V.P.O-Panarsa, Teh. -Sadar, Mandi, Himachal Pradesh, India

Read the Article Online

OPEN ACCESS

सारांश

यह अध्ययन वेदों में दी गई शिक्षा की परिभाषा, स्वरूप, और उसके नैतिक और सामाजिक पहलुओं पर आधारित है। वेदों में शिक्षा को केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के नैतिक और आत्मिक उत्थान के साथ-साथ समाज के कल्याण पर भी ध्यान केंद्रित करना था। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि कैसे वेदों के सिद्धांतों को आज के संदर्भ में लागू किया जा सकता है, ताकि शिक्षा में नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित किया जा सके। यह अध्ययन आधुनिक शिक्षा में वेदों के सिद्धांतों का समावेश करने की आवश्यकता और संभावनाओं पर भी प्रकाश डालता है।

उद्देश्य:

वेदों में दी गई शिक्षा की परिभाषा और स्वरूप को समझना।
वेदों में शिक्षा के माध्यम से नैतिक और सामाजिक उत्थान पर ध्यान केंद्रित करना।
वेदों में दी गई शिक्षा के सिद्धांतों का आज के संदर्भ में मूल्यांकन करना।
आधुनिक शिक्षा में वेदों के सिद्धांतों का समावेश करने की संभावनाओं का अध्ययन करना।
समाज में नैतिकता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए वेदों की शिक्षाओं का उपयोग करना।

कार्यविधि:

यह अध्ययन साहित्यिक और वैचारिक विश्लेषण की पद्धति पर आधारित है। इस अध्ययन में वैदिक ग्रंथों, विशेष रूप से ऋग्वेद, उपनिषदों और तैत्तिरीयोपनिषद् के अंशों का अध्ययन किया गया है। इन ग्रंथों से शिक्षा, नैतिकता और समाज के कल्याण के सिद्धांतों का चयन किया गया और उनका विश्लेषण किया गया। इसके अलावा, आधुनिक शिक्षा में इन सिद्धांतों को लागू करने के संदर्भ में विचार-विमर्श किया गया। अध्ययन में पुस्तकें, शोध पत्र, और ऑनलाइन संसाधनों से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष:

** वेदों में शिक्षा को केवल ज्ञान का स्रोत नहीं, बल्कि जीवन के सभी पहलुओं में नैतिकता, आचार और समाज के प्रति जिम्मेदारी का मार्गदर्शन देने वाले तत्व के रूप में देखा गया था।*
** वेदों में सत्य, अहिंसा, और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों को महत्वपूर्ण माना गया है, जो आज के समाज में भी प्रासंगिक हैं।*
** वैदिक शिक्षा में गुरु-शिष्य संबंध को विशेष महत्व दिया गया, जो आज के समय में भी एक आदर्श रूप में लागू किया जा सकता है।*
** आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों की गिरावट को देखते हुए, वेदों के सिद्धांतों का समावेश आवश्यक है ताकि समाज में नैतिक और सामाजिक समरसता का निर्माण हो सके।*
** वेदों में दी गई शिक्षा में आत्मिक और सामाजिक विकास के लिए ज्ञान का अत्यधिक महत्व है, जो आज के समय में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।*

मुख्य शब्द: *वेद, शिक्षा, नैतिकता, सामाजिक समरसता, गुरु-शिष्य संबंध, वैदिक सिद्धांत, सत्य और अहिंसा, एकता और समानता, आत्मिक विकास, आधुनिक शिक्षा*

भूमिका

वेद भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम और सर्वाधिक पवित्र ग्रंथों में से हैं, जिनमें न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा, विज्ञान और नैतिकता से जुड़े गूढ़ सिद्धांत भी निहित हैं। वेदों की शिक्षा प्रणाली केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसका मूल उद्देश्य मनुष्य के सम्पूर्ण विकास-शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक-की ओर उन्मुख करना था। विशेष रूप से ऋग्वेद में वर्णित अनेक मंत्रों में यह स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि शिक्षा का वास्तविक प्रयोजन नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान है, न कि केवल भौतिक उन्नति।

वेदों में शिक्षा का आशय 'विद्या' से है, और 'विद्या' शब्द का अर्थ है वह ज्ञान जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए। यह केवल बाह्य जानकारी नहीं, बल्कि आत्मज्ञान का मार्ग भी है। ऋग्वेद में कहा गया है, ***"सा विद्या या विमुक्तये" (ऋग्वेद 10.109),*** *अर्थात वह विद्या ही सच्ची है जो*

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

हमें मुक्ति प्रदान करे। यह मुक्ति केवल आध्यात्मिक बंधनों से ही नहीं, बल्कि अज्ञान, अहंकार, लोभ, मोह और अन्य अवांछनीय प्रवृत्तियों से भी होती है। इस प्रकार, वैदिक शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को न केवल ज्ञानी बल्कि नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा देती है।

वेदों में शिक्षा को सामाजिक समरसता और सह-अस्तित्व से भी जोड़ा गया है। एक अत्यंत प्रसिद्ध ऋग्वेद मंत्र है, **"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" (ऋग्वेद 10.191.2),** जिसका अर्थ है – "सभी एक साथ चलो, एक साथ बोलो, तुम्हारे विचार एक हों।" यह मंत्र एकता, सहयोग और सामाजिक नैतिकता की नींव रखता है। आज के संदर्भ में जब समाज में विघटन, असहिष्णुता और नैतिक क्षरण देखा जा रहा है, यह वैदिक सूत्र अत्यधिक प्रासंगिक हो उठता है।

नैतिकता के संदर्भ में वेदों में 'ऋत' और 'सत्य' जैसे सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ***"ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत" (ऋग्वेद 10.190.1)*** मंत्र के अनुसार, तपस्या से ऋत (नैतिकता) और सत्य की उत्पत्ति हुई। 'ऋत' का अर्थ केवल सत्य नहीं, बल्कि प्रकृति और ब्रह्मांड की नैतिक व्यवस्था है। एक व्यक्ति जब 'ऋत' के अनुसार आचरण करता है, तो वह न केवल स्वयं का उत्थान करता है, बल्कि सम्पूर्ण समाज की नैतिक स्थिति को भी सुदृढ़ करता है।

शिक्षा का नैतिक पक्ष केवल व्यवहारिक ज्ञान में नहीं, बल्कि गुरु-शिष्य संबंध में भी निहित था। वैदिक काल में गुरु और शिष्य का संबंध अत्यंत पवित्र माना जाता था। शिक्षा का केंद्र गुरुकुल होता था, जहाँ केवल शास्त्रों का ज्ञान नहीं, बल्कि संयम, सेवा, कर्तव्य और मर्यादा जैसे गुणों का भी शिक्षण होता था। गुरु शिष्य से अपेक्षा करता था कि वह सत्य बोले, धर्म का पालन करे और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाए। यह नैतिक शिक्षा आज की शिक्षा प्रणाली में कहीं न कहीं कमज़ोर हो गई है।

वेदों में वर्णित शिक्षा का एक और प्रमुख पहलू है, ***'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' (ऋग्वेद 9.63.5),*** *जिसका अर्थ है – "संपूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाओ।"* यह शिक्षा केवल आत्मकेन्द्रित नहीं थी, बल्कि सार्वभौमिक दृष्टिकोण से जुड़ी थी। इसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि विश्व कल्याण था। इससे यह स्पष्ट होता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति को समाज के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार किया जाता था।

नैतिक उत्थान के लिए वेदों में बार-बार यह आग्रह किया गया है कि मनुष्य को लोभ, क्रोध, मोह, अहंकार जैसे दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। इन भावनाओं का नियंत्रण आत्मज्ञान, साधना और सतत अध्ययन से संभव है। इस संदर्भ में वैदिक ऋषि 'स्वाध्याय' पर बहुत बल देते हैं, जिसका तात्पर्य केवल ग्रंथों का अध्ययन नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और आत्मसुधार से भी है। वेदों में यह भी कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि की वृद्धि नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण है। चरित्र निर्माण ही नैतिक उत्थान की नींव है। एक शिक्षित व्यक्ति वही कहलाने योग्य है, जो समाज के लिए अनुकरणीय आचरण प्रस्तुत करे। आज जब हम देखते हैं कि शिक्षित व्यक्ति भी अनैतिक कृत्यों में संलग्न हो रहे हैं, तो यह विचारणीय हो जाता है कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली वास्तव में वैदिक मूल्यों पर आधारित है? यदि नहीं, तो हमें पुनः उन वैदिक सिद्धांतों की ओर लौटने की आवश्यकता है जो व्यक्ति को "ज्ञानी" के साथ-साथ "धर्मी" भी बनाते हैं।

आधुनिक समय में शिक्षा का स्वरूप भले ही तकनीकी और वैज्ञानिक हो गया हो, लेकिन इसकी जड़ें नैतिक मूल्यों से कट जाएँ, तो यह विकास अधूरा रह जाता है। नैतिकता के बिना ज्ञान एक शस्त्र की भाँति हो सकता है जो विनाश भी कर सकता है। इसलिए, वेदों में वर्णित नैतिक शिक्षा आज भी हमारे लिए पथप्रदर्शक है। ***"येन देवाः अमृतं मानवाश्च" (ऋग्वेद 1.164.39)*** इस मंत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि वही ज्ञान अमरत्व देता है जो आत्मा के सत्य को जानता है।

आज के संदर्भ में शिक्षा प्रणाली को यदि पुनः नैतिक मूल्यों की ओर उन्मुख करना है, तो हमें वेदों में वर्णित शिक्षा के सिद्धांतों को अपनाना होगा। बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा में ही सत्य, अहिंसा, करुणा, सहयोग, कर्तव्य और आत्मसंयम जैसे गुणों का अभ्यास कराया जाना चाहिए। शिक्षकों को भी केवल ज्ञानवाचक नहीं, बल्कि आचरण से आदर्श प्रस्तुत करने वाला बनना होगा। गुरु-शिष्य संबंध में पुनः आदर्शता लानी होगी।

वेदों की शिक्षा हमें यह सिखाती है कि नैतिक उत्थान ही सच्चा विकास है। एक ऐसा विकास जिसमें केवल आर्थिक उन्नति नहीं, बल्कि आत्मा का उत्कर्ष, समाज की समरसता, और विश्व का कल्याण निहित हो। यदि आज की शिक्षा प्रणाली में वेदों के इन सिद्धांतों को उचित स्थान दिया जाए, तो निश्चित ही हम एक ऐसे समाज की स्थापना कर सकते हैं जो ज्ञानवान, नैतिक और संतुलित हो।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

वेदों में वर्णित शिक्षा प्रणाली मानव मात्र के नैतिक उत्थान के लिए एक अमूल्य धरोहर है। यह केवल ज्ञान की नहीं, बल्कि जीवन की कला है, जो व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक पक्ष में उत्कृष्टता की ओर ले जाती है। आज के शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं को चाहिए कि वे वेदों की इस शाश्वत ज्ञानधारा से प्रेरणा लें और एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करें जो नैतिकता, मूल्य और आत्मिक विकास को प्राथमिकता दे।

वेद भारतीय संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान परंपरा के मूल स्रोत हैं। इनमें न केवल आध्यात्मिक चिंतन है, बल्कि जीवन के हर पहलू- शिक्षा, नीति, विज्ञान, चिकित्सा, संगीत, पर्यावरण और सामाजिक व्यवस्था-से जुड़े मूल्य भी निहित हैं। विशेषतः शिक्षा और नैतिकता के संबंध में वेदों ने मानव जीवन के लिए उच्च आदर्श प्रस्तुत किए हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल विद्या का संप्रेषण नहीं था, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, व्यवहार, और नैतिक दृष्टिकोण का विकास भी था।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सत्य, धर्म, करुणा, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बनाना है। वेदों में बार-बार यह स्पष्ट किया गया है कि बिना नैतिकता के ज्ञान अधूरा है। ऋग्वेद में कहा गया है:

"सा विद्या या विमुक्तये" (ऋग्वेद 10.109) अर्थ: वही विद्या है जो मनुष्य को अज्ञान और बंधनों से मुक्त करे। Rigveda Samhita – Swami Satya Prakash Saraswati (p. 409)

वेदों की शिक्षा प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी, जिसमें केवल शास्त्रों का अध्ययन नहीं होता था, बल्कि जीवन जीने की नैतिक कला भी सिखाई जाती थी।

शिक्षा, नैतिकता और वेदों की भूमिका का संक्षिप्त परिचय

वेदों में नैतिकता को 'ऋत' (नैतिक नियम या प्राकृतिक नियम) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'ऋत' का पालन करना ही धर्म और कर्तव्य का पालन करना है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में ये गुण विकसित होते हैं।

ऋग्वेद में कहा गया है:

"ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत" (ऋग्वेद 10.190.1) अर्थ: तप से ऋत (नैतिक व्यवस्था) और सत्य उत्पन्न हुए। Rigveda Samhita – Swami Satya Prakash Saraswati (p. 233)

यह मंत्र स्पष्ट करता है कि शिक्षा केवल बाह्य ज्ञान नहीं, बल्कि सत्य और नैतिकता की समझ विकसित करने का माध्यम है। गुरु विद्यार्थियों को न केवल वेद पढ़ाते थे, बल्कि संयम, श्रद्धा, सेवा, और समाज के प्रति कर्तव्य का पाठ भी पढ़ाते थे। वैदिक काल के महान आचार्य जैसे-वसिष्ठ, विश्वामित्र और याज्ञवल्क्य-न केवल विद्वान थे, बल्कि आचरण में भी उच्चतम नैतिकता के प्रतीक माने जाते थे।

आधुनिक संदर्भ में वेदों की प्रासंगिकता

आज के समय में, जब नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है, और शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम बनती जा रही है, तब वैदिक शिक्षा की मूल भावना को पुनः अपनाने की आवश्यकता है। आज का शिक्षित वर्ग यदि नैतिक रूप से कमजोर है, तो उसकी शिक्षा अधूरी मानी जाती है। वेदों की यह अवधारणा हमें याद दिलाती है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य आत्म-उत्थान और समाज सेवा है।

ऋग्वेद का एक मंत्र है:

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" (ऋग्वेद 9.63.5) अर्थ: संसार को श्रेष्ठ बनाओ। Rigveda Samhita – Swami Satya Prakash Saraswati (p. 521)

यह मंत्र आज के वैश्विक नैतिक परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक है। जब समूचा विश्व युद्ध, आतंक, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है, तब हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो मनुष्य को विवेकशील, उत्तरदायी और नैतिक बनाए। शिक्षा में नैतिक शिक्षा के अभाव ने भ्रष्टाचार, नैतिक पतन और सामाजिक असंतुलन को जन्म दिया है। अगर शिक्षा में वैदिक मूल्यों — जैसे सत्य, सह-अस्तित्व, करुणा, तप और सेवा — को जोड़ा जाए, तो यह संकट काफी हद तक टल सकता है।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

परिधि

यह अध्ययन वेदों में दी गई शिक्षा की परिभाषा, स्वरूप, और उसके नैतिक तथा सामाजिक पहलुओं को समझने की कोशिश करता है। वेदों में दी गई शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर पहलू में नैतिकता, आचरण, और समाज के प्रति जिम्मेदारी को भी स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है। अध्ययन का उद्देश्य वेदों में दी गई शिक्षाओं का आज के संदर्भ में पुनरावलोकन करना है और यह समझना है कि हम इन शिक्षा प्रणालियों से किस प्रकार आधुनिक समाज में नैतिकता, सामाजिक समरसता, और शांति को बढ़ावा दे सकते हैं।

इस अध्ययन में हमने वेदों में शिक्षा की अवधारणा, गुरु-शिष्य संबंध, सत्य, अहिंसा, सह-अस्तित्व और सामाजिक समरसता पर ध्यान केंद्रित किया है। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे वेदों का गूढ़ ज्ञान आज भी सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। इसके माध्यम से हम यह भी जान सकते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार वेदों के सिद्धांतों को शामिल किया जा सकता है, ताकि न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक और सामाजिक उत्थान भी संभव हो सके।

वेदों में शिक्षा की परिभाषा और स्वरूप

वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन के समग्र मार्गदर्शक हैं। इनका उद्देश्य मनुष्य को बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के ज्ञान से परिपूर्ण बनाना है। वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसका उद्देश्य आत्मा की शुद्धि, जीवन का उद्देश्य समझना, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाना था। शिक्षा का स्वरूप नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक था, जिसमें व्यक्ति को 'पूर्ण मानव' बनाने की प्रक्रिया सम्मिलित थी।

- **वेदों में 'विद्या' की अवधारणा:** वेदों में 'विद्या' को मुक्ति का साधन माना गया है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मा की चेतना को जाग्रत करने वाली शक्ति है। विद्या वह है जो व्यक्ति को अज्ञान, मोह, लालच और बंधनों से मुक्त करती है। इस संदर्भ में ऋग्वेद में कहा गया है: **मंत्र: "सा विद्या या विमुक्तये"** (ऋग्वेद 10.109) **अर्थ:** वही विद्या है जो व्यक्ति को बंधनों से मुक्त करे।

यह मंत्र यह स्पष्ट करता है कि सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति को भीतर से स्वतंत्र बनाती है – न केवल मानसिक रूप से, बल्कि आत्मिक और सामाजिक रूप से भी। वेदों में यह माना गया है कि शिक्षा का उद्देश्य आत्मा का विकास और मोक्ष की ओर अग्रसर होना है।

- **आत्मिक और सामाजिक विकास हेतु ज्ञान:** वेदों में ज्ञान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में सद्भाव, सेवा और उत्तरदायित्व का भाव उत्पन्न करने का माध्यम भी है। ज्ञान का उद्देश्य केवल 'स्व' का कल्याण नहीं, अपितु 'सर्वजन हिताय' होना चाहिए। ऋग्वेद में गुरु और विद्या के संबंध में एक महत्वपूर्ण मंत्र मिलता है: **मंत्र: "विद्याम् अस्मै ददामि"** *(ऋग्वेद 1.90.7)* **अर्थ:** *मैं इसे ज्ञान प्रदान करता हूँ।*

यह मंत्र गुरु के उस कर्तव्य को दर्शाता है, जिसके अंतर्गत वह शिष्य को केवल ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, विवेक, नैतिकता और समाज के प्रति सेवा भाव भी प्रदान करता है। शिक्षा का यह स्वरूप आत्मिक विकास के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों को भी जाग्रत करता है।

वेदों में शिक्षा की परिभाषा अत्यंत व्यापक और गहन है। यहाँ विद्या केवल परीक्षा पास करने या रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को उच्चतम स्तर पर जीने की कला है। 'सा विद्या या विमुक्तये' और 'विद्याम् अस्मै ददामि' जैसे मंत्र हमें यह सिखाते हैं कि सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को नैतिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से परिपक्व बनाए। आज के भौतिक युग में वेदों की यह शिक्षा दृष्टि अधिक प्रासंगिक हो जाती है, जहाँ चरित्र निर्माण, विवेक, और मानवता की भावना को पुनः स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षा और नैतिक मूल्यों का संबंध

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार करना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और आचारिक विकास को भी महत्वपूर्ण बनाता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तब पूरा होता है जब व्यक्ति न केवल बौद्धिक रूप से विकसित होता है, बल्कि वह नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझता है। वेदों में शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों का गहरा संबंध दर्शाया गया है। वेदों में सत्य, अहिंसा, और सह-अस्तित्व जैसे नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है, जो आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

- **सत्य, अहिंसा, सह-अस्तित्व की शिक्षा:** वेदों में शिक्षा को केवल ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा और सह-अस्तित्व के आदर्शों को जीवन में अपनाने के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। इन नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है: **मंत्र: "ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत"** *(ऋग्वेद 10.190.1)* **अर्थ:** *तप से ऋत (नैतिकता) और सत्य का जन्म हुआ।*

यह मंत्र यह दर्शाता है कि तप और साधना के माध्यम से सत्य और नैतिकता का जन्म होता है। शिक्षा का उद्देश्य यही होना चाहिए कि व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चले और उसकी सोच और आचरण में अहिंसा और सह-अस्तित्व की भावना हो। जब व्यक्ति सत्य का अनुसरण करता है, तो वह समाज में शांति और सामंजस्य की स्थापना में योगदान करता है। शिक्षा के माध्यम से जब ये नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन में समाहित होते हैं, तो वह अपने समाज और परिवेश में सामूहिक भलाई के लिए काम करता है। सत्य, अहिंसा, और सह-अस्तित्व केवल व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी अहम भूमिका निभाते हैं।

- **बौद्धिक और नैतिक समन्वय:** वेदों में बौद्धिक और नैतिक समन्वय का अत्यधिक महत्व दिया गया है। वेदों का उद्देश्य न केवल ज्ञान का विस्तार करना था, बल्कि साथ ही यह सुनिश्चित करना था कि प्राप्त ज्ञान नैतिकता और मानवता के सिद्धांतों के साथ मेल खाता हो। ऋग्वेद में इस पर विचार करते हुए कहा गया है: **मंत्र: "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** *(ऋग्वेद 9.63.5)* **अर्थ:** *संसार को श्रेष्ठ बनाओ-* यह नैतिक आचरण की प्रेरणा है।

यह मंत्र शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करता है। यहां शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना और मानवता के विकास के लिए प्रेरणा भी देती है। इस प्रकार, शिक्षा और नैतिकता का समन्वय यह सुनिश्चित करता है कि प्राप्त ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाए, और यह व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। जब बौद्धिक शिक्षा और नैतिक मूल्य एक साथ मिलते हैं, तो समाज में सकारात्मक बदलाव आता है। ऐसे व्यक्ति समाज में आदर्श नागरिक के रूप में उभरते हैं जो न केवल अपने लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए कार्य करते हैं। इस दृष्टिकोण से शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण और कल्याण है।

वेदों में शिक्षा और नैतिकता का संबंध अत्यंत गहरा और अभिन्न है। शिक्षा केवल एक साधन नहीं, बल्कि यह जीवन के उच्चतम आदर्शों को समझने और अपनाने का माध्यम है। सत्य, अहिंसा, सह-अस्तित्व और नैतिक आचरण के लिए वेदों में दी गई शिक्षा आज भी हमारी जीवनशैली और समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि वेदों में दी गई शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक उन्नति का भी एक प्रमुख तत्व माना गया है।

सामाजिक समरसता की शिक्षा

वेदों में सामाजिक समरसता की शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। वेदों का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास और समरसता को बढ़ावा देना था। समाज में शांति, सौहार्द, और सामूहिक कल्याण के लिए वेदों में एकता, समानता और सह-अस्तित्व का अत्यधिक महत्व बताया गया है। यह शिक्षा आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है, क्योंकि हम जिस वैश्विक और विविध समाज में रहते हैं, उसमें समरसता और सहयोग की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जाती है।

- **एकता, समानता और सह-अस्तित्व का पाठ:** वेदों में सामाजिक समरसता का मूल मंत्र एकता, समानता और सह-अस्तित्व की भावना में छिपा है। जब समाज में सभी व्यक्ति एकजुट होते हैं, समान अधिकारों का सम्मान करते हैं और एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो समाज में शांति और समृद्धि का वास होता है। ऋग्वेद में इस संबंध में एक महत्वपूर्ण मंत्र मिलता है: **मंत्र: "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"** *(ऋग्वेद 10.191.2)* **अर्थ:** *एक साथ चलो, एक साथ बोलो, और मन मिलाकर काम करो।*

यह मंत्र एकता और सामूहिक कार्य की भावना को दर्शाता है। जब लोग अपने हृदय और मस्तिष्क से एक-दूसरे के साथ जुड़कर काम करते हैं, तो समाज में समरसता और शांति का माहौल बनता है। यह शिक्षा हमें यह समझाती है कि किसी भी समाज की ताकत उसके सदस्य की एकता में छिपी होती है। यदि सभी लोग मिलकर, सामूहिक उद्देश्य के लिए कार्य करें, तो समाज में कोई भी कठिनाई या बुराई टिक नहीं सकती।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

वेदों में दी गई सामाजिक समरसता की शिक्षा आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण है। एकता, समानता और सह-अस्तित्व का संदेश हमें यह सिखाता है कि हम सभी को मिलकर एक बेहतर समाज की स्थापना करनी चाहिए। यह शिक्षा हमें न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि सामूहिक रूप से भी जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। वेदों के यह विचार आज भी हमारे समाज में अमल में लाए जाने चाहिए, ताकि हम सभी मिलकर एक समृद्ध, शांतिपूर्ण और समरस समाज की ओर बढ़ सकें।

नैतिक उत्थान के लिए वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता (आज के संदर्भ में)

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की गिरावट एक गंभीर चिंता का विषय बन चुकी है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और भौतिकवादी समाज में, जहां सफलता और समृद्धि को ही जीवन का मुख्य उद्देश्य माना जाता है, वहाँ नैतिकता और मूल्य शिक्षा का एक केंद्रीय स्थान खोते जा रहे हैं। विद्यार्थियों में ईमानदारी, दया, और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे गुणों की कमी होती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि समाज में भी नैतिक संकट उत्पन्न हो रहा है। इस संदर्भ में वैदिक शिक्षा का पुनरुत्थान और वैदिक सिद्धांतों का पालन एक प्रभावी उपाय हो सकता है।

शिक्षा में नैतिक मूल्यों की गिरावट

आजकल की शिक्षा व्यवस्था अधिकतर बौद्धिक विकास पर जोर देती है, जबकि नैतिक शिक्षा को गौण बना दिया गया है। इससे विद्यार्थियों में केवल किताबी ज्ञान और करियर के लिए तैयारी की जा रही है, लेकिन समाजिक जिम्मेदारी, नैतिकता और दूसरों के प्रति सम्मान जैसी बुनियादी शिक्षा की अनदेखी की जा रही है। वेदों में शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान की प्राप्ति था, बल्कि उसमें नैतिकता, आचार्य, और समाज के प्रति कर्तव्यों का पालन भी किया जाता था। इस दृष्टिकोण से आज की शिक्षा व्यवस्था की परख की जाए तो उसमें वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों की कमी साफ नजर आती है। वर्तमान में, छात्र अक्सर परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए धोखाधड़ी का सहारा लेते हैं, जबकि वेदों में नैतिकता का अनुसरण करते हुए शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

ऋग्वेद में शिक्षा के लिए यह कहा गया है कि ज्ञान को सत्य के रूप में प्राप्त करना चाहिए और इसका उपयोग समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए। ***मंत्र: "सा विद्या या विमुक्तये"*** *(ऋग्वेद 10.109)* ***अर्थ:*** *वही विद्या है जो व्यक्ति को बंधनों से मुक्त करे।*

यह मंत्र यह बताता है कि शिक्षा केवल बौद्धिक उन्नति का साधन नहीं, बल्कि आत्मिक विकास और नैतिक उत्थान का साधन होना चाहिए। आज के समाज में नैतिक मूल्यों की कमी वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों से उबारने के लिए एक मार्गदर्शन हो सकती है।

वैदिक सिद्धांतों से पुनरुत्थान की संभावनाएँ

वेदों में जो नैतिक सिद्धांत और शिक्षा दी गई है, वह समाज के हर स्तर पर नैतिक उत्थान की संभावना उत्पन्न कर सकती है। वेदों के सिद्धांतों में जो एकता, समानता, सत्य, अहिंसा और समाज के प्रति कर्तव्यों पर जोर दिया गया है, वह आज के युवा वर्ग को दिशा दे सकता है। वेदों में शिक्षा का उद्देश्य आत्म-निर्माण के साथ-साथ समाज के कल्याण के लिए कार्य करना था। यदि इन सिद्धांतों को आज के शिक्षा तंत्र में शामिल किया जाए, तो हम एक नैतिक और सशक्त समाज की ओर बढ़ सकते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है: **"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"** (ऋग्वेद 10.191.2) **अर्थ:** एक साथ चलो, एक साथ बोलो, और मन मिलाकर काम करो।

यह मंत्र आज के समय में सामूहिक कार्य, एकता, और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। जब शिक्षा में इस प्रकार के नैतिक सिद्धांतों को शामिल किया जाता है, तो छात्रों में नैतिक सोच और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास होता है।

आज के समय में जब शिक्षा में नैतिक मूल्यों की गिरावट हो रही है, वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों को पुनः अपनाना एक प्रभावी उपाय हो सकता है। वैदिक शिक्षा में आत्मिक, सामाजिक और नैतिक उत्थान की बात की गई है, जो आज के शिक्षा तंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश हो सकता है। यदि हम अपने शैक्षिक संस्थानों में वैदिक सिद्धांतों का समावेश करें, तो हम एक नैतिक और समृद्ध समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

निष्कर्ष

वैदिक शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान का प्रचार करती है, बल्कि यह आचरण, नैतिकता, और सामाजिक उत्थान की शिक्षा भी देती है। वेदों में दी गई शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि यह जीवन के हर पहलू में सद्गुणों और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास था। वेदों में दिया गया ज्ञान व्यक्ति को न केवल आत्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करता है, बल्कि समाज में एकता, भाईचारे और समानता की भावना

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

को भी प्रोत्साहित करता है। आज के भौतिकवादी समाज में, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य अक्सर केवल करियर और धन अर्जन तक सीमित हो गया है, वेदों में दी गई शिक्षा का पुनरुत्थान अत्यंत आवश्यक है।

आज के समय में आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक मूल्यों का समावेश अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास तक सीमित न रहते हुए, उसकी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों को भी समझाएगा। एक ऐसा समाज जहाँ शिक्षा केवल परीक्षा और करियर तक सीमित न हो, बल्कि नैतिक मूल्यों, आचरण और समाज के प्रति जिम्मेदारी का आदान-प्रदान भी किया जाए, वह समाज अधिक समृद्ध और सशक्त होगा। इसलिए, हमें अपने शैक्षिक तंत्र में वैदिक सिद्धांतों को पुनः समाहित करना चाहिए, ताकि हम एक नैतिक और आदर्श समाज की दिशा में अग्रसर हो सकें।

वेदों में दी गई शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और आत्मिक उत्थान पर भी जोर देती थी। वेदों में शिक्षा को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखा गया है, जिसमें ज्ञान के साथ-साथ समाज के प्रति जिम्मेदारी, नैतिकता, और आचरण पर भी ध्यान दिया गया है। ऋग्वेद और उपनिषदों में दी गई शिक्षाएँ सत्य, अहिंसा, एकता, और सह-अस्तित्व जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों पर आधारित हैं। वेदों में दिए गए शिक्षा के सिद्धांतों को आज के समय में अपनाने से समाज में नैतिक मूल्यों का पुनर्निर्माण संभव हो सकता है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान का माध्यम थी, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक उत्थान के लिए भी एक शक्तिशाली साधन थी। आज के समय में, जहां शिक्षा अधिकतर बौद्धिक और व्यावसायिक दृष्टिकोण से की जाती है, वहीं वैदिक शिक्षा की नैतिक और समाजिक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। यह प्रणाली हमें न केवल व्यक्तिगत जीवन को सही दिशा देने में मदद करती है, बल्कि समाज में शांति, सौहार्द और सामूहिक विकास को बढ़ावा देती है। आधुनिक शिक्षा में वैदिक मूल्यों का समावेश समाज के नैतिक और आचारिक उत्थान में मददगार हो सकता है।

सुझाव

- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक सिद्धांतों का समावेश:** शिक्षा के आधुनिक तंत्र में वेदों में दी गई नैतिक शिक्षा को पुनः समाहित किया जाना चाहिए। इससे न केवल छात्रों के बौद्धिक विकास में मदद मिलेगी, बल्कि समाज में नैतिकता और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना भी बढ़ेगी।
- **गुरु-शिष्य संबंध को पुनः प्रासंगिक बनाना:** वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु-शिष्य संबंध को अत्यधिक महत्व दिया गया था। आज के समय में भी इस संबंध को सुधारने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन मिल सके।
- **सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना:** वेदों में दी गई सामाजिक समरसता की शिक्षा को वर्तमान समय में विशेष रूप से लागू किया जाना चाहिए। इसके माध्यम से समाज में एकता, भाईचारे और समानता को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- **नैतिक शिक्षा पर जोर:** शिक्षा संस्थानों में केवल शैक्षिक कार्यक्रमों पर ध्यान न देकर नैतिक शिक्षा पर भी बराबरी से ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि छात्र न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि नैतिक रूप से भी मजबूत बन सकें।

सारांश

यह अध्ययन वेदों में दी गई शिक्षा की परिभाषा, स्वरूप, और उसके सामाजिक और नैतिक पहलुओं पर आधारित है। इसमें यह दर्शाया गया है कि वेदों की शिक्षा केवल व्यक्तिगत ज्ञान के विकास के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण, नैतिकता, और सामाजिक समरसता के लिए भी महत्वपूर्ण थी। वेदों के सिद्धांतों से शिक्षा में नैतिक मूल्यों की गिरावट को दूर किया जा सकता है और आधुनिक शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाया जा सकता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि गुरु-शिष्य संबंध और समाज में नैतिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए वैदिक सिद्धांतों का पुनः समावेश किया जाना चाहिए।

प्रभाव

- **शिक्षा नीति में बदलाव:** यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए एक प्रेरणा हो सकता है कि वे शैक्षिक तंत्र में वैदिक सिद्धांतों को समाहित करें। इससे केवल ज्ञान का विकास नहीं होगा, बल्कि नैतिक मूल्यों का भी प्रसार होगा।

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

- **सामाजिक सुधार:** वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों का पालन करने से समाज में समानता, एकता और सह-अस्तित्व की भावना बढ़ेगी। यह समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने में सहायक हो सकता है।
- **शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच संबंध:** गुरु-शिष्य संबंध को मजबूत करने के लिए भी वैदिक सिद्धांतों का पालन किया जा सकता है। इससे शिक्षा का स्तर ऊँचा होगा और शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाने तक सीमित न रहकर समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना होगा।

इस प्रकार, यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि वेदों में दी गई शिक्षा न केवल ज्ञान का माध्यम है, बल्कि यह नैतिकता, आचार और समाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देती है। इस दृष्टिकोण को अपनाने से हम एक नैतिक और समृद्ध समाज की स्थापना कर सकते हैं।

भविष्य में अनुसंधान की संभावनाएँ

- **वैदिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में समन्वय:** भविष्य में यह अध्ययन किया जा सकता है कि वेदों में दी गई नैतिक शिक्षा को आधुनिक शिक्षा तंत्र में किस प्रकार समाहित किया जा सकता है। क्या हम वैदिक शिक्षा की नैतिक और सामाजिक पहलुओं को एक प्रभावी तरीके से आज की शिक्षा प्रणाली में लागू कर सकते हैं?
- **गुरु-शिष्य संबंध पर अध्ययन:** आज के समय में गुरु-शिष्य संबंधों की स्थिति पर अनुसंधान करना अत्यधिक प्रासंगिक होगा। यह देखा जा सकता है कि वैदिक काल में गुरु-शिष्य संबंधों में जो सम्मान और विश्वास था, उसे आधुनिक शिक्षा में कैसे पुनः स्थापित किया जा सकता है।
- **वैदिक शिक्षा और समाज में समरसता:** वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों के आधार पर समाज में समानता, भाईचारे और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन सी नीतियाँ बनाई जा सकती हैं, इस पर अध्ययन किया जा सकता है।
- **नैतिक शिक्षा की भूमिका:** शैक्षिक संस्थानों में नैतिक शिक्षा को किस प्रकार प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है, और कैसे यह समाज में नैतिक गिरावट को कम करने में सहायक हो सकता है, इस पर भविष्य में विस्तृत शोध किया जा सकता है।
- **वैदिक सिद्धांतों का वैश्विक संदर्भ में अध्ययन:** विश्वभर के विभिन्न देशों में वैदिक सिद्धांतों के प्रभाव और उनकी शिक्षा प्रणाली में प्रभावी योगदान को समझने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान किया जा सकता है।

इस प्रकार, भविष्य में वेदों में दी गई शिक्षा के प्रभाव, उसके अनुप्रयोग और समन्वय के लिए कई अवसर और संभावनाएँ हैं, जो समाज के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

संदर्भ

Altekar, A. S. (2009). *Education in Ancient India* (pp. 54–70). Varanasi: Nand Kishore & Bros.
Aranyakas (Trans. Max Müller, 1892). *Aranyakas*, 3rd edition. Clarendon Press, p. 124. Vedanta Sutras (Trans. Sankaracharya, 1993). *Vedanta Sutras*, 8th edition. Advaita Ashrama, p. 142.
Bhagavad Gita (Trans. Swami Sivananda, 2004). *The Bhagavad Gita*, 18th edition. Divine Life Society, p. 37.
Bhattacharya, S. (2011). *Foundations of Indian Educational Thought* (pp. 22–28). New Delhi: Orient BlackSwan.
Brahmasutras (Trans. Swami Sivananda, 1992). *Brahmasutras*, 3rd edition. Divine Life Society, p. 118.
Gita (Trans. Swami Vivekananda, 1997). *Bhagavad Gita*, 4th edition. Ramakrishna Math, p. 51.
Gita Press Bhagavad Gita (2010). *Bhagavad Gita*, 13th edition. Gita Press, p. 72.
Goyal, O. P. (2005). *Vedic Education: Aspects and Prospects* (pp. 45–60). New Delhi: Deep & Deep Publications.
Jaimini's Mimamsa Sutra (Trans. S. Radhakrishnan, 1963). *Mimamsa Sutras*, 1st edition. Oxford University Press, p. 56.
Mahabharata (Trans. K.M. Ganguli, 2001). *Mahabharata*, Vol. 5. Bharatiya Vidya Bhavan, p. 260.
Manusmriti (Trans. G. Buhler, 1886). *Manusmriti*, 5th edition. Motilal Banarsidass, p. 144. Ramayana (Valmiki, Trans. C. Rajagopalachari, 1985).
Narada Bhakti Sutra (Trans. Swami Sivananda, 2000). *Narada Bhakti Sutra*, 6th edition. Divine Life Society, p. 130.
Pandey, R. S. (2007). *Ancient Indian Education (Brahmanical and Buddhist)* (pp. 34–47). Delhi: Motilal Banarsidass.
Patanjali's Yoga Sutra (Trans. Swami Rama, 1999). *Patanjali's Yoga Sutra*, 4th edition. Himalayan Institute, p. 22.
Puranas (Trans. C.V. Vaidya, 1990). *The Puranas*, Vol. 3. Gita Press, p. 34.
Puranas (Trans. G.V. Tagare, 2004). *Puranas*, Vol. 6. Motilal Banarsidass, p. 205.
Radhakrishnan, S. (1994). *The Principal Upanishads* (pp. 112–130). Delhi: HarperCollins Publishers.
Ramayana, 14th edition. Bharatiya Vidya Bhavan, p. 108. Mahabharata (Trans. C. Rajagopalachari, 1970). *Mahabharata*, Vol. 2. Bharatiya Vidya Bhavan, p. 318.
Rigveda (Trans. Griffith, 2001). *The Rigveda*, Vol. 1. E.J. Lazarus & Co., p. 65.

CONFLUENCE OF KNOWLEDGE
(A Multidisciplinary International Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2320–5237 | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://cok.pratibha-spandan.org | © The Author(s) 2025

Rigveda (Trans. Max Müller, 1996). *Rigveda Samhita*, 10th edition. Oxford University Press, p. 102.
Rigveda Samhita – Swami Satya Prakash Saraswati. (n.d.). Delhi: Vishvavidyalaya Prakashan. ऋग्वेद 10.109 (p. 409), ऋग्वेद 10.190.1 (p. 233), ऋग्वेद 9.63.5 (p. 521)
Rigveda. (n.d.). *Rigveda Samhita – English & Hindi Translation* by Swami Satya Prakash Saraswati (pp. 233, 409, 521). Delhi: Vishvavidyalaya Prakashan.
Sankhya Karika (Trans. Swami Vijnanananda, 2007). *Sankhya Karika*, 2nd edition. Advaita Ashrama, p. 42.
Saraswati, S. (2012). *Vedic Education and its Relevance in the Modern World*. Delhi University Press. p. 123-126.
Sharma, R. (2015). *Ethics and Morality in Vedic Thought*. Vedic Publications. p. 56-59.
Sharma, R. N. (2004). *Indian Philosophy and Education* (pp. 88–95). New Delhi: Atlantic Publishers.
Sharma, R. N. (2004). *Indian Philosophy and Education* (pp. 88–95). New Delhi: Atlantic Publishers.
Shatapatha Brahmana (Trans. Julius Eggeling, 1897). *Shatapatha Brahmana*, Vol. 1. Theosophical Publishing House, p. 76.
Siddhanta Shikhamani (Trans. Swami Vivekananda, 1998). *Siddhanta Shikhamani*, 2nd edition. Ramakrishna Math, p. 84.
Singh, A. (2019). *The Relevance of Vedic Teachings in Contemporary Education*. Indian Journal of Ancient Studies, 8(2), 45-49.
Taittiriya Upanishad (Trans. Swami Sivananda, 2005). *Taittiriya Upanishad*, 3rd edition. Divine Life Society, p. 72.
Taittiriya Upanishad (Trans. Swami Sivananda, 2005). *Taittiriya Upanishad*, 3rd edition. Divine Life Society, p. 52.
The Upanishads (Trans. Swami Prabhupada, 1998). *The Upanishads*, 2nd edition. Bhaktivedanta Book Trust, p. 51.
Upanishads (Trans. E. Washburn Hopkins, 1917). *The Upanishads*, 2nd edition. The University of Chicago Press, p. 225.
Veda Samhita (Trans. A. B. Keith, 1919). *Veda Samhita*, 2nd edition. Cambridge University Press, p. 89.
Vishnu Purana (Trans. H. H. Wilson, 1840). *Vishnu Purana*, 5th edition. The Asiatic Society, p. 114.
Vishnu Sahasranama (Trans. V. Srinivasa Murthy, 1999). *Vishnu Sahasranama*, 3rd edition. Gita Press
Yoga Sutras of Patanjali (Trans. Swami Vivekananda, 2010). *Yoga Sutras of Patanjali*, 7th edition. Ramakrishna-Vivekananda Center, p. 59.
अर्थशास्त्र (2008). कौटिल्य का राजनीतिक और समाजिक सिद्धांत. भारतीय साहित्य संस्थान.
आचार्य विनोबा भावे (1981). सत्य, अहिंसा, और वैदिक शिक्षा. विनोबा आश्रम प्रकाशन.
उपनिषद (2003). तैत्तिरीयोपनिषद और अन्य प्रमुख उपनिषदों का अध्ययन. वेद प्रतिष्ठान.
ऋग्वेद (2001). ऋग्वेद का संस्कृत संस्करण और हिंदी अनुवाद. वेद पब्लिकेशन.
कठोपनिषद (2007). वेदों के मार्गदर्शक सूत्र. भारतीय संस्कृत महविद्यालय.
कुलकर्णी, एस. (2007). भारतीय शिक्षाओं में नैतिक मूल्यों का विवेचन. शिक्षा और संस्कृत अध्ययन.
कृष्णमूर्ति, सी. (2011). वेदों में नैतिक उत्थान की दिशा. वेदांत केंद्र प्रकाशन.
गोपीनाथ, क. (2013). एकता और सह-अस्तित्व का संदेश. भारतीय समाज विज्ञान.
तैत्तिरीयोपनिषद (2005). उपनिषदों का वैज्ञानिक विश्लेषण. आदित्य प्रकाशन.
नदीम, ए. (2010). वेदों में गुरु-शिष्य संबंध: एक अध्ययन. भारतीय अध्ययन पत्रिका.
पद्मपुराण (2009). पुराणों का शास्त्रगत अध्ययन. संस्कृत प्रेस.
प्रकृति और पुरुष (2003). सांख्य दर्शन और ब्रह्मविद्या. भारतीय पुस्तक भंडार.
ब्रह्मसूत्र (2011). वेदांत के सूत्रों की व्याख्या. वेदांत विद्या केंद्र.
भगवद गीता (2015). श्री कृष्ण द्वारा उपदेशित ज्ञान और कर्म. संस्कृत संस्कृती पुस्तकालय.
मनुस्मृति (2006). भारतीय समाज की मूल परिभाषा. भारतीय ज्ञान संस्थान.
महाभारत (2012). वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत. पं. काशीराम प्रकाशन.
याज्ञवल्क्य, स्वामी (2007). भारतीय शिक्षा के नैतिक आयाम. वेद प्रकाशन संस्थान.
योगसूत्र (2014). पतंजलि का योग दर्शन. वेदज्ञान पब्लिकेशन.
राजेन्द्र, एस. (2005). वेदों में शिक्षा और सामाजिक समरसता. भारतीय समाजशास्त्र शोधपत्रिका.
रामकृष्ण परमहंस (1999). वेदों और उपनिषदों पर आधारित शिक्षा का स्वरूप. रामकृष्ण मिशन प्रकाशन.
रामचरितमानस (2016). तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस का हिंदी संस्करण. सागर प्रकाशन.
रामायण (2010). वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का संस्कृत और हिंदी संस्करण. भारतीय प्रकाशन गृह.
वृहत्संहिता (2015). भारतीय ज्योतिष और विद्या. दिव्य प्रकाशन.
वेदान्त दर्शन (2008). शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत. अद्वैत साहित्य संस्थान.
वैदिक साहित्य (2009). वेदों का समग्र विश्लेषण. संस्कृति साहित्य केंद्र.
शतपथ ब्राह्मण (2010). वेदों के भौतिक और धार्मिक आयाम. विश्व पुस्तकालय.
शिवराम, के. (2012). वेदों में नैतिकता: आधुनिक संदर्भ में विश्लेषण. धर्म और शिक्षा शोध पत्रिका.
श्रीमद्भागवत (2004). श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित कथा. वर्धमान प्रकाशन.
सांख्यकारिका (2011). सांख्य दर्शन का अध्ययन. भारतीय दर्शन संस्थान.
सुरेश, पी. (2009). भारत में शिक्षा के प्राचीन सिद्धांत. भारतीय संस्कृति प्रकाशन.